महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय बड़ौदा से पी-एच. डी. (हिन्दी) की उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध-प्रबंध की रुपरेखा

शोध का शीर्षक

"गुजरात के भवाई लोकनृत्य के सामाजिक एवं सांस्कृतिक अध्ययन"

अनुसंधित्सु
पढियार पिनल डाहयाभाई
शोध-छात्रा
हिन्दी विभाग, कला संकाय,
महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय,
बड़ौदा

निर्देशिका
डॉ. कल्पना गवली
प्रोफेसर
हिन्दी विभाग, कला संकाय,
महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय,
बड़ौदा

नामांकन संख्या : FOA /1392

दिनांक : 19-05-2015

हिन्दी विभाग, कला संकाय,
महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय,
बड़ौदा

वर्ष – 2018

अनुक्रम

क्रम	शीर्षक	पृष्ठ क्रमांक
१.	प्राक्कथन	१
२.	शोध विषय की प्रेरणा एवं विषय चयन	३
३.	सामग्री संकलन सूत्र	४
४	शोध-कार्य का उद्देश्य	५
५	विषय का महत्व	६
६	शोध प्रबंध का विभाजन	८
७	कृतज्ञता ज्ञापन	१०
८	परिशिष्ट	१३

प्राक्कथन

परिवर्तन प्रकृति का अनिवार्यता है। इससे कोई बच नहीं सकता। इतिहास इस बात का साक्षी है कि जिस तत्व में किसी-न-किसी रूप में गतिशीलता बनी रही, अनेकानेक गतिरोधों के बावजूद अंतत: किसी -न-किसी अंश में उसका अस्तित्व विद्यमान रहा। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी जी का मानना है कि समाज में गतिशीलता का बना रहना अच्छा है। प्रवाह सर्वत्र शोध-शक्ति का काम करता है- नदी में भी, जीवन में भी, साहित्य में भी। साहित्य जो समाज का दर्पण माना जाता हैं। समाज में लोगों द्वारा रचा गया है। साहित्य में एक साहित्यक रचना होती है वह है लोक साहित्य। लोक साहित्य वह जो लोगों द्वारा रचा गया साहित्य है। लोक साहित्य की रचना का कोई लेखक नहीं होता हैं। वह साहित्य समाज के सभी लोग द्वारा रचा जाता हैं।

लोक साहित्य के अंतर्गत में भी रचनाएं होती है, जैसे की लोक कथा, लोक गाथा, लोक नाट्य, लोक नृत्य, लोक गीत, सुभाषितों का समावेश होता है। लोक साहित्य की रचना केवल एक या दो सदियों से नहीं होती हैं उनका उद्भव लोगों के साथ हुआ हैं। लोक साहित्य शिष्ट साहित्य के रूप में नहीं होता है। वह तो मौखिक साहित्य होता हैं। एक इंसान कोई गीत गाए तो बाकि के लोग भी वह गीत को गाते हैं और यहीं परंपरा सदीयों तक चली रहती हैं। यह रचना को लोक साहित्य माना जाता हैं।

लोक साहित्य का संकलन भी अभी अभी शुरू किया हैं। भारतीय लोक साहित्य का इतिहास बहुत ही बृहत रूप में मीलता हैं। भारत के अलग- अलग राज्यों के अपनी एक अलग लोक संस्कृति एवं लोक साहित्य हैं। भारत में लोक साहित्य पर बहुत सारे लेखकों ने काम किया हैं, जिन्हें में बापुराव देसाई, श्याम परमार, सत्येंद्र, कृष्णदेव उपाध्याय आदी लेखकों का संकलन हमें मीलता है। भारत में सभी राज्यों के अपने अपने लोक साहित्य का एक अलग ही इतिहास हैं।

भारत में गुजरात राज्य का अपना बृहत रूप में लोक साहित्य का संकलन एवं इतिहास मीलता हैं। गुजरात प्रदेश में सौराष्ट्र को लोक साहित्य की मातृभूमि माना जाता हैं। गुजरात के लोक साहित्यकार में झवेर चंद मेघाणी जी को लोकसाहित्य के पिता माना जाता हैं। उनके अलावा जयमल्ल परमार, बळंवत जानी, हसु याज्ञिक, आदि का भी महत्वपूर्ण योगादान हैं। गुजरात के लोक गीतों का प्रचार इतना हुवा हैं की कही सारे हिंदी फिल्मी गीतों भी उसका प्रयोग हुआ हैं। जैसे की "महेदी ते वावी मडंवे ने ऐनो रंग गयो गुजरात रे महेदी रंग लाग्यो", "लीली लेमडी रे लीलो नागरवेल नो छोड" आदी का प्रयोग हमे देखने को मीलता है। गुजरात का लोक गीत के साथ साथ उसका लोक नृत्य भी बहुत प्रचलित है। गुजरात का लोकनृत्य गरबा विश्व विख्यात है। आज भी गुजरात की नवरात्री को बहुत ही विशेष रूप में मनाया जाता हैं। गरबा का प्रयोग भी केवल एक गुजराती नही करता अपितु विश्व में रहने वाले सभी लोग को गरबा पसंद आता हैं। आज विदेशों मे भी गरबा का भी विशेष रूप से मनाया जाता है।

गुजरात के लोक साहित्य में लोक कथा एवं लोक गाथा भी प्रचुर मात्रा में मीलती है। लोक कथा में हमे जेसल तोरल की कथा तो साथ में राजा महाराजा की भी कथा मीलति है। लोक गाथा का भी विशेष रूप से मीलता हैं। लोक डायरा का भी गुजरात के लोक सहित्य में एक महत्वपूर्ण रूप से मीलता है। गुजरात के डायरा में हमें वीरों की

गाथा का एवंम ऐतिहासिक रचनाओं का गान के साथ लोगों को मनोरंजन करते है। लोक साहित्य की एक रचना अख्यान भी हमें मीलता है। अख्यान में रामापीर, भाथीजी, का होता है, उनमें उनके बालकांड से लेके जो वीरों ने श्रेष्ठ काम किये है उनका गाने के माध्यम से लोगों को बाताते हैं। आख्यान में दोहों का गान होता है साथ मे वह एक वार्ता के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। अख्यान ज्यादत्तर मंदिर के प्रागण मे होते हैं। लोक साहित्य में कहावतों का भी महत्व दिया गया है। गुजराती कहावते का उपयोग कही सारी जगाहों पर होता है।

गुजरात के लोक साहित्य के महत्वपूर्ण रचना में लोक नाट्य हैं। गुजरात का यह लोक नाट्य का आरंभ हमें १६ मी १७ सदी मे मीलता है। भवाई का उदगन स्थान उत्तर गुजरात को माना जाता है। लोक नाट्य भवाई के प्रेरेता असाईत ठाकर को माना जाता है। असाईत ठाकर ने एक पटेल की लडकी रक्षा करने से उनकों ज्ञाति से बाहर कर दिया था उसी समय उन्होंने माताजी की आराधना से एक वरदान रूप यह भवाई नाट्य मीलता है। माना जाता हैं असाईत ने एक ही रात में ३६० वेशों को लिखा था। आज समय रहते उतने वेशों नही रहे परंतु मुख्य वेशों का नाट्य मीलता हैं। असाईत जाति से ब्राह्मिण थे बाद में उनको त्रगाडा के तरगाडा के रूप से जाने लगे।

भवाई लोक नाट्य उत्तर गुजरात के निवासी अमृत नायक, प्राणसुख नायक, जयशंकर सुंदरी, बापुलाल नायक आदि कलाकारों भवाई के वेश को करके अपने नाम को सुर्वण अक्षर में लिख दिया है। भवाई में जो वाजींत्रों का जो उपयोग होता है वह है भूंगळ के बजाने से भवाई का आरंभ होता है। उसके साथ रंगला जो पात्र होता है वह नाट्यकला की देण माना जाता है।

कलानगरी भावनगर मे हलुरीया चोक, काळुभा रोड, आताभाई चोक आदि विस्तारों और जिल्ले के कही सारे जगाहों पर नवरात्री के दिन में भवाई के वेशों के साथ होती है। भवाई के संशोधन में भावनगर के शक्ति मंडळ के नाम देखने को मिलते है। भवाई को लेकर बहुत सारे संशोधन हुए है जिसमें सुधा देसाई, कुष्णकांत कडकिया जैसे लेखकों का भी महत्वपूर्ण काम किया हैं।

भवाई के वेशों मे मनोरंजन के साधन केरूप मे हमे मीलता है। पहले मनोरंजन का साधन नहीं था तब यह भवाई की मनुष्य के मनोरंजन एक मात्र साधन के रूप में था। भवाई के कलाकार गांव -गांव जा के भवाई को करते थे। आज आधुनिक युग में बहुत सारे मनोरंजन के साधन होने के कारण भवाई लुप्त होती जा रही हैं। आज के लोगों को यह भवाई को इतना महत्व नहीं दिया हैं। भवाई के वेश केवल नायक जाति के लोग करते थे। समय जाते जाते आज सभी लोग भवाई को करते है। भवाई में पहले स्त्री का जो पात्र था वह केवल पुरुष ही करता था पर अब स्त्री को भी भवाई में शामिल किया गया है। भवाई जीस विषय को लेके होती है उस विषय पर लेखन कार्य स्वयं भवाई कलाकार खुद करते है। उनके कोई भी रचिता नहीं होता है। भवाई के अलग अलग विषयों में सामाजिक सांस्कृतिक आध्यात्मिक का भी समावेश होता है। समाज के कुरीति को भवाई के माध्यम से हमारे सामने रखते है।

भवाई के भी अलग अलग प्रकार है। भवाई मे परंपारिक एवं आधुनिक यह दो प्रकार की होती है। आधुनिक भवाई रंगभूमि में होती है। जब की परंपारिक भवाई मंदिर के प्रागंण में होती है। आधुनिक भवाई में स्त्री एवं पुरुष दोनों पात्र भाग लेते है। परंपारिक भवाई में यह नही होता हैं। पुरुष ही सभी पात्रों का रोल करते है।

भवाई के अंतर्गत कही सारे लोगों ने संशोधन किया है। डॉ.सुधा देसाई का भवाई पर जो संशोधन कार्य है वह बहुत ही महत्वपूर्ण अंग माना जाता है। कृष्णकांत कडकिया जी ने भी भवाई के अंतर्गत गहराई से चर्चा की है। लोक गुर्जरी में भी बहुत सारे शोध आलेख का विस्तार पूर्वक बताया गया है। भवाई को गुजरात का लोकनाट्य माना गया है। गुजरात के अलावा भी कही सारे राज्यों मे भवाई प्रस्तुत की जाती है। राजस्थान मे उदयपुर मे आज भी भवाई देखने को मीलती है। उसी प्रकार महाराष्ट्र का लोक नाट्य तमाशा भी भवाई की तरह होता है उनमे कही सारे साम्य देखने को मिलते है।

गुजरात में रहने के साथ मेंने भवाई को देखा था और तभी से मन में एक जिज्ञासा थी की यह भवाई कैसे होती है? आज समय के साथ मुझे यह गुजरात साहित्य को और भी नजदिक से जाने का परखने का एक अवसर मिला मेने लोक साहित्य को एम.ए के दौरान लोक साहित्य का पेपर पढा तब से गुजरात के साथ अन्य राज्य के लोक साहित्य को भी में जाने लगी आगे चल कर गुजराती लोक साहित्य पढा और लोक नाट्य भवाई में अपनी रूची दिखाई तब यह कार्य मेरा शुरु हुआ।

शोध विषय की प्रेरणा एवं विषय चयन:-

किसी भी शोध-कार्य की प्रेरक भाव-भूमि के रूप में मनुष्य की जिज्ञासावृति होती है। साहित्य में शोध -कार्य के पीछे यही जिज्ञासा कुछ नया देने की सोच जिम्मेदार है। किन्हीं विशेष परिस्थितियों में मनुष्य की जिज्ञासावृति एक निशिचत दिशा तय करने लगती है और शोध-कार्य का स्वरूप भी यहीं से आकर ग्रहण करने लगता है। मेरे अनुसंधित्सु रूप की भूमिका के पीछे यही जिज्ञासावृति कारणरूप है।

मेरी मातृभाषा गुजराती है, लेकिन प्रांरभ से ही मेरी अभिरुचि हिंदी के प्रति रही है। हिंदी भाषा के प्रति विशेष लगाव होने के कारण मैंने हिंदी विषय लेकर एम.फिल तक अध्ययन किया। मैंने अपने जीवन में पढाई के प्रति विशेष करके हिंदी भाषा के प्रति मेरी रुचि रही हैं। जब मैंने अनुस्तानक में संशोधन का विचार आया यह विचार मेरे प्रिय एवं गूरुजन प्रो. कल्पना गवली जी को बताया उन्होंने उसी समय मेरे विचार को प्रोत्साहित किया और उन्होंने मुझे एम.फिल करने की राह दिखाई। एम.फिल में उत्तरणी होने बाद संशोधन कार्य में यानी पीएच.डी में प्रवेश किया।

मेरी रुची नाटक के प्रत्ये ज्यादा थी। मेरे एम.फिल का लघुशोध ग्रंथ भी भीष्मसहानी कृत "कबीरा खड़ा बाजार में" नाटक के उपर काम किया था। पी-एच.डी में भी नाटक में रूची होने से मेरे गुरु प्रो. कल्पना गवली जी ने मुझे लोक साहित्य के अंतर्गत कार्य करने को कहा। मैडम ने बताया की अगर आपकी रुची नाटक मे है तो आप लोक साहित्य के उपर अपना शोध कार्य कर सकते है। यह विषय मेरे लिए नया था। लोक साहित्य को तो बचपन से जानते थे। बचपन में जब दादा-दादी, मां गीत गाती थी और वार्ता भी सुनाती थी इसलिए थोडा बहुत तो लोक साहित्य को जानते थे, अपितु यह तो संशोधन का कार्य था इसलिए गहराई से जान ना बहुत ही जरुरी था। एम.ए के दौरान मैंने लोक साहित्य को पढा था तब से रुची तो थी ही और अब यह कार्य करना था, मैडम ने मुजे यह कार्य करने के लिए लोक साहित्य की पुस्तक का पढ़ना जरुरी था। पुस्तकों पढने के बाद मैडम से लोक साहित्य पर चर्चा

विचारणा हुए। उसी समय मैंने भी मैडम की आज्ञा को अपना लक्ष्य बना लिया उसी समय हमारे विभाग में प्रो. शैलजा भारद्वाज थे उन्होंने मुझे मेरे विषय को लेकर जहां जहां त्रुटिया थी वह निकाल के मेरी रूप रेखा को सही रूप में लाया। पहले मेरे विषय में भारत के मुख्य चार राज्यों के लोक नाट्य लिए थे। तब उन्होंने और बाकि शिक्षक ने मिलकर मेरे संशोधन कार्य को सही रूप देने के लिए उन्होंने केवल गुजरात के प्रमुख लोक नाट्य भवाई को मेरे संशोधन का विषय बनाते हुए शोध प्रबंध का शीर्षक रखा "गुजरात के लोकनाट्य भवाई के सामाजिक एवं सांस्कृतिक अध्ययन" ।

सामग्री संकलन के सूत्र:

शोध कार्य एवं तत्संबंधी सामग्री संकलन करना श्रमसाध्य कार्य है। किसी भी शोधकार्य को तब तक प्रामणिक रूप से प्रारंभ और पूरा नहीं किया जा सकता, जब तक कि उससे संबंधित आवश्यक सामग्री न हो। विशेषकर अहिंदी भाषी प्रदेश के लिए हिंदी में शोध कार्य करना और संदर्भ पुस्तक एवं साहित्य प्राप्त करना अति कठिन कर्य है। आपका विषय जब गुजराती भाषा से हो तो उसमें शोध कार्य करना बहुत ही कठिन बन जाता है। गुजराती भाषा एवं हिंदी भाषा के ग्रामीण एवं साहित्यक शब्द मिलना बहुत ही कठीन हो जाता है। शोध संबंधित तमाम पुस्तकें एवं संपूर्ण सामग्री एकत्रित करना मेरे लिए थोडा कष्टपूर्ण कार्य अवश्य था, परंतु मैंने हिम्मत नहीं हारी। सामग्री संकलन के कार्य में सतत जुटा रहा।

जिल्ला पुस्तकालय एवं अन्य कॉलजों से मुझे जरुरी किताबें एवं सामग्री प्राप्त होती रही। बार-बार मेरे मार्गदर्शक प्रो. कल्पना गवली जी गुजराती विभाग से जुडे भरत पंडिया सर, भरत महेता सर, पुंडलिक पवार सर, कांती मालसर सर, साथ में भवाई मंडळ के सभी भवाई कलाकारों ने मुझेसमय समय पर सामग्री दे ते रहे। गुजराती साहित्य अकादमी ने मुझे सम्य पर पुस्तकों की सहाय की है। प्रतिलिपी वेब साईट से भी भवाई कलाकार की रचना भी प्राप्त होती रही। हंसा महेता ग्रंथालय में भी मेरे विषय को लेकर बहुत सारी जरुरी पुस्तकों की प्राप्ति हुए है। साथ में वडोदरा की ग्रंथालय से भी महत्वपूर्ण सामग्री प्राप्त हुए है।

भवाई कलाकार के माध्यम से मुझे विडियो एवं ऑडियो की प्राप्ति हुए है। इन सभी के सहयोग से अनुसंधान कार्य के लिए अध्ययन सामग्री का प्रश्न आसान हो गया। पत्र-पत्रिकाएं, शब्दकोश एवं इंटरनेट पर से उपलब्ध कई वेबसाईट से सामग्री संकलित की। जिससे मेरी सामग्री संकलन की कष्टपूर्ण यात्रा का सुखद अंत आ गया।

शोध कार्य का उद्देश्य:

प्रत्येक कार्य के पीछे कोई उद्देश्य होता है। शोध जैसा कढिन कार्य तो बिना उद्देश्य के हो ही नहीं सकता। मेरे इस शोध-कार्य के पीछे भी महत्वपूर्ण उद्देश्य छीपा है, जो इस प्रकार है।-

१. लोक साहित्य को गहराई से मूल्यांकन करने का मेरा प्रयास रहा है।

२. लोक साहित्य में लोक नाट्य को लेकर गहन अध्यायन करके गुजरात के लोक नाट्य भवाई के उपर प्रकाश डाला।

३. इस शोध प्रबंध में गुजरात के लोक साहित्य तथा लोक नाटय भवाई का हिंदी भाषा में कोई शोध कार्य नहीं हुआ हैं। अत: यह नया व मौलिक विषय है।

४ लोक नाट्य भवाई जो गुजरात का मुख्य लोक नाट्य है यह बात को लेकर इस शोध प्रबंध में उन पर सर्वांगीय अध्ययन प्रस्तुत करने का मेरा प्रयास रहा है।

५. लोक नाट्य भवाई के माध्यम से सामाजिक रूप से समाज में रही कुप्रथा तथा समाजिक कार्य को महत्व देते है उन पर प्रकाश डाला है।

६. लोक नाट्य भवाई के माध्यम से सांस्कृतिक द्रष्टि से संस्कृति का जतन एवं उनकी परख दिखना महत्वपूर्ण प्रकाश डाला है।

७. लोक नाट्य भवाई जो आज लुप्त होती जा रही है हम उसे किस तरह से बचाएं यह बात को लेकर अपनी विचारों को प्रस्तुत किया है।

८. मेरा कार्य केवल शोध कार्य पूर्ण करना नहीं है,मेरे शोध कार्य पूर्ण होने से समाज तथा साहित्य को कुछ नया प्रदान हो यही मेरा लक्ष्य है।

विषय का महत्व:

आज विश्व में मनुष्य इतना आगे निकल गया है कि उसने अपने जीवन को ऐसे दायरे में संजोकर रखा दिया है, जिस कारण मनुष्य ने दुनिया को अपनी मुठ्ठी में कैद कर लिया, लेकिन अपने आपको पूरी दुनिया में अकेला महसूस करने लगा है। तब साहित्य एक मात्र आधार है, जो व्यक्ति के अकेलेपन में भी रंग भर देता है। जो असुंदर को भी सुंदर बनाने में काम आता है। ऐसे ही लोक साहित्य हैं लोक

साहित्य में लोक नाट्य महत्व माना जाता है। गुजरात का लोक साहित्य में लोक नाट्य के माध्यम से लोगों को मनोरंजन भी दिया जाता है।

लोक नाट्य में मनुष्य अपने आपको उसके समक्ष पाता है, नाट्य के माध्यम से कुप्रथा का भी ज्ञान दिया जाता है। लोग नाट्य देखने से अपने आप पे जो बीती वह महेसूस करने के साथ आनंद और उदासी की भी छाई जाती है। नाट्य में मनुष्य को रिति-रिवाज का भी ज्ञान मिलता है। पहले लोक नाट्य इसलिए होते थे के लोगों मनोरंजन के साथ नैतिकता के मूल्यो का भी ज्ञान दे पाए। नाट्य में सांस्कृतिक द्रष्टि भी दिखाई देती है।

नाट्य में सांस्कृतिक को भी महत्व दिया हैं। सांस्कृति को समाज की धरोहर माना जाता हैं, यही बात नाट्य के माध्यम से उनको भी समजया जाता हैं। नाट्य की भाषा होती है वह लोक भाषा होती है, इसीलिए सभी लोग अपने मन से नाटय का मजा देते है। नाट्य मे रुदन, पीडा, हास्य, अश्लिलता भी होती है। साथ मे ज्ञान की बाते भी होती हैं। लोक नाटय भवाई में समाज के महत्वपूर्ण प्रश्न को भी बताया गया है। जैसे की कुप्रथा, बाल विवाह, कजोडा, झंडा झूलण आदि वेशों को दिखाके समाज में जागृती लाने का भी कार्य किया है।

लोक नाट्य भवाई में सांस्कृतिक के माध्यम से समाज में रहने वाले मनुष्य को किस प्रकार के निति विचार का आचरण करना चाहिए। साथ में संस्कृति की घरोहर को किस तरह से उनकी रक्षा कि जाएं वहा भी दिखाते है।

मेरे शोध कार्य में प्रस्तुत विचारों का एक विशिष्ट मूल्यांकन मेरे शोध-प्रबंध की विशेषता रही है। मेरा यह शोध-कार्य अंतिम नहीं है। परंतु इतना अवश्य कहूंगी कि मेरा यह शोध प्रबंध मेरे सहयोगियों एवं भविष्य के अन्य शोधकर्ताओं के लिएक कुछ सीमा तक प्रेरणादायी अवश्य बनेगा। इस दृष्टि से इसकी उपादेयता और प्रासंगिकता सिद्ध होगी।

शोध प्रबंध का विभाजन:

शोध प्रबंध को निम्नांकित अध्यायों में विभाजित किया गया है-

"भारत के लोकसाहित्य अध्याय १

के प्रकार"

मेने अपने शोध कार्य के प्रथम अध्याय में लोक साहित्य का सामन्य परिचय , अर्थ तथा लोक और साहित्य का अर्थ एवं व्याख्या दी है। विविध लेखकों तथा विद्धवानों द्वारा दी गई लोकसाहित्य की परिभाषा का अपने प्रथम अध्याय में संकलन किया है। शिष्ट साहित्य और लोक सहित्य का अंतर कि परिभाषा दी गई हैं। लोक संस्कृति तथा लोक साहित्य की पृथक सत्ता को भी दिखाया है। भारत के लोक साहित्य के प्रमुख रूप जैसे लोक-गीत लोक-नाट्य लोक-गाथा लोक-कथा का व्याख्या सहित उनकी परिभाषा दी है। भारत के विविध राज्यों के लोक साहित्य का परिचय दिया हैं। भारत के प्रमुख राज्यों के लोकसाहित्य के रूप को लिया है जैसे कि प्रमुख लोकगीत लोककथा, लोकनाट्य, लोकगाथा का परिचय दिया है। लोक संस्कृति के अवधारणा, लोक संस्कृति की परिभाषा और लोक संस्कृति और लोक साहित्य का अंत:संबंध का परिचय दिया है।

अध्याय २

"गुजरात का लोकसाहित्य"

मैंने अपने शोध कार्य के दूसरे अध्याय में गुजरात के लोक साहित्य का विस्तार पूर्वक परिचय दिया है । गुजरात के लोकसाहित्य में गुजरात के लोकगीत कि परिभाषा देते हुए उनके अलग अलग प्रकार का विस्तार पूर्वक परिचय दिया हैं। गुजरात के लोक नाट्य में प्रमुख लोक नाट्य का परिचय दिया हैं। उसके अलावा गुजरात के अलग प्रदेश में जो लोकनाट्य हो रहे है उनका भी परिचय दिया हैं। गुजरात के लोक गाथा में पौराणिक, आध्यात्मिक तथा प्रचलित गाथा का विस्तार पूर्वक परिचय दिया हैं। गुजरात के लोक कथा कि परिभाषा देते हुए प्रमुख तथा प्रचलित लोक कथा का परिचय दिया है। गुजरात के लोक सुभाषित (कहावत) का भी संकलन में अपने अध्याय में लिया है।

अध्याय ३

"भवाई लोकनाट्य का सामान्य परिचय"

मैंने अपने शोध कार्य के तृतीय अध्याय में गुजरात का प्रमुख लोक नाट्य भवाई का परिचय दिया हैं। भवाई शब्द की व्युत्पत्ति कैसे हुई उनका विस्तार से परिचय दिया है। गुजरात में किस किस क्षेत्र में भवाई चल रही है या कौन-से क्षेत्र भवाई के अंतर्गत हैं। भवाई के उद्भव का परिचय दिया है। भवाई के अलग-अलग प्रकार होते हैं उनका भी परिचय दिया है। भवाई में सामाजिक और पारंपारिक भवाई का विस्तार पूर्वक परिचय दिया है। अपने अध्याय में

भवाई की विशेषता का भी परिचय दिया हैं। भवाई को मनोरंजन का साधन माना जाता था। पहले मनोरंजन का साधन केवल भवाई के रूप में देखने को मिलती है। भवाई में सामाजिक समस्याओं का भी उल्लेख होता है। साथ में आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक को भी दिखा गया है। भवाई के वेशों का भी विस्तार पूर्वक परिचय दिया है।

अध्याय:४

"भवाई लोक नाट्य का सामाजिक अध्ययन"

शोध प्रबंध के चोथे एवं महत्वपूर्ण अध्याय में शोध विषय के अंतर्गत भवाई लोकनाट्य में जो सामाजिक समस्याओं को लिया है। भवाई में सामाजिक समस्याओं को विशेष रूप से लिया गया है। । मैंने अपने शोध विषय को ध्यान में रखते हुए भवाई के माध्यम से समाज की सभी समस्याओं को समाजिक अध्ययन के आधार पर में जो महत्वपूर्ण समस्याए को दिखाया गया है उसे मेंने अपने शोध में विस्तार पूर्वक दिया है।

पारिवारिक समस्या में परिवार में होने वाली समस्याओं को विस्तार पूर्वक बताया है। आजकल सरकार ने परिवार नियोजन की बात का प्रचार करते है परंतु भवाई में बहुत समय पहले अपने नाट्य में दिखाते है। दहेज समस्या का भी परिवार एवं समाज की कुप्रथा का भवाई मे बताकर सामान्य लोगों को दिखाया गया है। जाति वाद का भेदभाव आज से नही पितु सदियों से चला आ रहा है और आज के जमाने के अंतर्गत भवाई में जाति वाद का मुख्य रूप से एक समस्या बन गई है। भवाई में नाट्य के माध्यम से हमें तथा ग्रामीण व्यक्ति को दिखाया जाता हैं। नशा मुक्ति कहों या व्यसन मुक्ति का भी प्रचार सरकार के साथ यह भवाई में दिखाया गया है। बेटी बचाओ जैसी सामाजिक म समस्याओं का भी विस्तार पूर्वक वर्णम किया गया है। उसके अतिरिक्त बहुत सारे विषयों को भवाई नाट्य में दिखाया गया हैं। आधुनिक भवाई में यह समस्याओं को विस्तार पूर्वक भवाई कलाकार जो प्रस्तुत करते हैं उनका विस्तार से परिचय दिया गया है।

अध्याय ५

"भवाई लोकनाट्य का सांस्कृतिक अध्ययन"

अपने अंतिम अध्याय में भवाई नाट्य में एवं मेरे शोध विषय के अंतर्गत है वह है सांस्कृतिक। भवाई गुजरात का प्रमुख लोक नाट्य में माना है। भवाई का उद्भव तो सांस्कृतिक द्रष्टि से हि हुआ है। उनका विस्तार पूर्वक परिचय दिया है। सांस्कृतिक अंतर्गत में मूल्य विचार को महत्व देते हुए भवाई मे जो सांस्कृतिक मूल्यो का भी परिचय दिया है। नीति का महत्व देते हुए भवाई में नीति विचार का भी महत्व दिया है। जीवन में आचार को महत्व दिया है उसका जीवन एवं सामाज को आचार का महत्व क्या है वह परिचय दिया है। आस्था का वह जीवन की प्राण रूप हैं आस्था के अलावा कोई भी कार्य सिद्ध नहीं होता हैं उनका भी परिचय दिया है। अंधश्रद्धा भी महत्व दिया हैं उनका भी परिचय दिया गया हैं। उनके अलवा कही सारे सांस्कृतिक पहलू को ध्यान में रखते हुए बहुत सारे अलग मुख्य एवं गौण का परिचय दिया है। सांस्कृतिक द्रष्टि को हम ने परंपरा एवं संगीत पक्ष को भी महत्व प्रदान करते हुए उनका विस्तार पूर्वक परिचय दिया गया है।

अध्याय ६

यह अध्याय में भवाई के कलाकार से भवाई के अंतर्गत जो चर्चा हुए उनका एक ऑडियों के रूप में रखा है।

उपसंहार:

अंत में उपसंहार के अंतर्गत समग्र शोध प्रबंध का सिंहावलोकन करते हुए यह स्थापना की गई है कि लोक साहित्य में गुजरात का लोक साहित्य विकसित रूप से हैं। गुजरात के लोक साहित्य में जो लोकनाट्य भवाई का एक अलग ही रूप हैं। भवाई में समाज में होने वाले कुप्रथा एवं आधुनिक विषयों का विस्तार पूर्वक उपयोग किया जा रहा हैं। भवाई पहले लोक मनोरंजन का साधन के रूप में थी पर समय के साथ उनका रूप भी बदल गया अब भवाई केवल एक नाट्य के रूप में मिलती हैं। भवाई में समाज को ध्यान में रखते हुए उनका ही महत्व दिया है। भवाई में लोकनाट्य में प्रचलित हुए साथ में एक ज्ञान का साधन बनकर भी आइ है। भवाई में जो वाजिंत्र होते हैं उनका भी एक अलग महत्व होता है। भवाई में प्रयोग होने वाली भाषा सामान्य भाषा होती है। सामान्य मनुष्य भी वह भाषा एवं भवाई में देने वाले संदेश को समज सके। भवाई के कलाकार होते जो होते है वह भवाई की जो नाट्य की बात है तो उनका कोई रचिता नहीं होता है। भवाई के कलाकार अपने आप हि उस नाट्य को अपने हिसाब से करते है। भवाई को पहले ना कोई रंगभूमि मिली थी वह तो गांव गांव जा कर गांव के मुख्य द्वार पर ही सब गांव के लोगों को एकठा करके भवाई को दिखाते है। आज समय के साथ उसका रूप भी बदला हैं। आज भवाई को एक रंगभूमि का स्थान दिया गया है। आधुनिक भवाई जो है वह केवल एक विषय को लेकर होती है जब कि पारंपारिक भवाई जो होती वह भवाई सभी वेशों को लेकर होती है । पारंपारिक भवाई रात भर चलती है। भवाई लोक नाट्य को अपने तरफ से हो सके उतना श्रेष्ठ बनाने की कोशीश कि है। भवाई में आगे भी शोध हो सकती है जैसे कि आधुनिक एवं पारंपारिक भवाई। भवाई के लुप्त हुए वेशों के अंतर्गत हो सकता है। अंत में संदर्भ ग्रंथों की सूची प्रस्तुत की गई है।

कृतज्ञता -ज्ञापन

कृतज्ञता ज्ञापित करना भले ही एक औपचारिकता हो, उसकी अनिवार्यता को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है। कृतज्ञता-ज्ञापन भारतीय संस्कृति की एक विशेषता एवं परम्परा है। इस परम्परा का निर्वहन करते हुए मेरा परम कर्तव्य रहता है की मैं अपने शोध-प्रबंध के अनुसंधान कार्य में सहायक ऐसे व्यक्तियों एवं संस्थाओं के प्रति अपनी हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापन करती हूं।

सर्वप्रथम परम कृपालु सरस्वती के चरणों में नतमस्तक होकर प्रणाम करती हूं, जिन्होंने मुझे शिक्षा की इतनी उँचाईयों तक पहुँचाया और आज उन्ही की कृपा एवं आशीर्वाद से मैं यह शोध प्रबंध प्रस्तुत कर रही हूं।

मैं गुजराती लोक साहित्य के प्रति अपना कृतज्ञ करती हूं जिन्होंने मुजे शोध विषय के रूप में भवाई लोक नाट्य का चयन करने का अवसर प्राप्त हुआ है।

शोध प्रबंध पूर्ण हो जाने पर मैं उनका आभार व्यक्त करता हूं, जिनके आशीर्वाद, सहयोग एवं सुझाव से मैं अपने लक्ष्य तक पहूंच सकी हू। इस क्रम में मैं सर्वप्रथम महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय, बड़ौदा के हिन्दी विभागाध्यक्ष एवं विभाग के गुरूजनों के प्रति आभार व्यक्त करना चाहती हूं। जिन्होंने गुजरात के लोकसाहित्य में विशेष रूप से भवाई लोकनाट्य की अपनी कृपापूर्ण स्वीकृति प्रदान करते हुए मुझे प्रोत्साहित किया है। अपने गुरु प्रो. कल्पना गवली जी जिन्होंने मुझे समय समय पर शोध विषय के प्रति मुझे सही रूप से मार्गदर्शन किया एवं जहां समस्या आइ तब गुरु ने अपनी तरफ से पूर्ण रूप से उनकी सहायता एवं आशीर्वाद प्राप्त हुए। उनका निर्देशन मुझे हर समय पर मिलता रहा। मैडम का स्नेह आशीर्वाद हमें हर समस्या में एक नई किरण की रोशनी की रूप में प्राप्त होते रहे है। अपनी विद्यार्थीनी के शोध प्रबंध पूर्ण करने के लिए हर समय पर ज्ञान देते रहे। उनका यह ऋण अपनी पूरे जीवन को सर्मपित करके भी चुका नहीं पाऊंगी। मैं विभाध्याक्ष प्रो. दक्षा मिस्त्री जी का भी आभार मानती हूं। विभाग के अन्य प्रोफेसर की भी आभारी हूं। डॉ. मनीषा ठक्कर जी, प्रो. शन्नो पाण्डेय जी, डॉ, मायाप्रकाश पाण्डेय जी, प्रो. कनुभाई निनामा जी एवं पूर्व प्रो. शैलजा भारद्वाज जी की भी में आभारी हूं। यह सब गुरुजन ने हर समय मुझे शोध के अनुसंधान में अपने आशीर्वाद एवं ज्ञान देते रहे।

मेरे इस शोधकार्य में मेरे पूजनीय पिताजी डाह्याभाई पढियार एवं मेरे माताश्री पढियार कपिलाबेन कि आभारी हूं। में आज में यहां तक पढाई कर पाइ उनका श्रेय मेरे माताजी एवं पिताजी को जाता है। पिताजी हमेशा मेरे ढाल कवच बनकर मुझे पढ़ने के लिए प्ररित किया है। आज यह केवल मेरा नहीं अपितु मेरे माता एवं पिता का स्वपन साकार होने जा रहा हैं। मेरे भाई निलेश का भी बहुत बडा योगदान दिया हैं। वह भी मुझे जब कभी संशोधन कार्य हेतु जाना होता था वह सदैव मेरे साथ रहता था। मेरी दीदी अल्पा जी का भी बहुत बडा योगदान दिया है एवं मेरे जीजाजी का भी हर समय पर मुझे साथ दिया हुआ है। मेरे अन्य परिवाजनों कि आभारी हूं। इन सबकी मै आभारी हूं। मेरे मित्र में मनाली जोषी जिन्होंने हर समय पर मुझे पढ़ने के प्रति सजाग किया हैं। अगर में यह भी कह दू के आज उनकी वजह से ही पीएच.डी कर रही हू तो यह बिलकूल सही बात हैं। सच्चे मित्र के रूप में वह हर पल मेरे साथ रही हैं। मेरे दूसरे मित्र मानसी जयस्वाल, तेजस व्यास, भाग्याश्री वारके यह सभी मित्रों का मुजे हर समय पर साथ मिलता रहा है। मैं उनकि कृतज्ञाति हू। मेरे अन्य शोध छात्र एवं छात्राएं का भी आभार मानती हूं। मेरे शोध कार्य के विषय के अंतर्गत मुझे डॉ. जगदीश भट्ट जी का भी में आभार मानती हूं। भवाई के कलाकार अजय भाई नायक, काली भवाई मंडल, जो हर समय पर मुझे सहाय करते रहे उनका भी में आभार व्यक्त करती हूं। मेरे एम.फिल के शिक्षकगण का बहुत ही विशेष स्थान हैं। आज उनके आशीर्वाद एवं ज्ञान के वजह से आज यह शोध कार्य मेरा सम्पूर्ण हो रहा है। गुजराती साहित्य अकादमी का भी में आभार मानती हूं। हंसा महेता पुस्तकालय का भी में आभार मानती हूं जहां से समय समय मुझे पुस्तक प्राप्त होती रही हैं। जिन्होंने प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से सहाय की उन सभी की में आभारी हूं। जिनके प्रोत्साहन एवं आशीर्वाद के लिए मैं सदैव आभारी एवं ऋणी रहूंगी। मैं अंत में प्रस्तुत शोध प्रबंध विद्वानों के समक्ष रखते हुए क्षमायाचना करना चाहती हूं कि यथा संभव सुधार व परिश्रम करने पर भी शोध-प्रबंध में कुछ कमियां अवश्य रह गई होगी, क्योंकि ज्ञान का क्षेत्र असीम है उसमें विस्तार मनन व चिंतन की अनंत संभावनाएं है।

मेरा प्रयास " गुजरात के भवाई लोकनाट्य का सामजिक एवं सांस्कृतिक अध्ययन "को व्यक्त करने का रहा है। यदि यह तत्कालीन समाज एवं सांस्कृतिक रूप से समझने में थोडा सहायक होगा तो में स्वयं को कृतकृत्य समझूंगी। यह मेरा विनम्र प्रयास है, इसमें किंचित त्रुटियां भी संभव है, आशा है कि विद्वत्जन इनक नगण्य मानकर इस कार्य को स्वीकार करेंगे। अंत में परमपिता एवं गुरु प्रो. कल्पना गवली के चरण में प्रणाम करती हूं।

स्थल:बडौदा

दिनांक:

शोध -निर्देशक
प्रो. कल्पना गवली

विनीत
पढियार पिनल डाह्याभाई

परिशिष्ट

संदर्भ- ग्रंथ-सूची

१. सहायक ग्रंथ सूची:

क्रम	रचना का नाम	लेखक	प्रकाशन
१.	लोक साहित्य का अध्ययन	डॉ. त्रिलोचन पाण्डेय	लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद
२.	लोक साहित्य विज्ञान	डॉ. सत्येंद्र	राजस्थानी ग्रंथाकार, जोधपुर
३.	लोक साहित्य की सांस्कृतिक परंपरा	डॉ. मनोहर शर्मा	डॉ. सत्येंद्र रोशनलाल जैन एण्डं संस, जयपुर-३
०४	लोक साहित्य	डॉ. इंदु यादव	साहित्य रत्नालय, कानपूर, संस्करण-२००४
०५	हिंदी साहित्य का बृहत इतिहास भाग-१६	महापंडित राहुल सांकृत्यायन, डॉ. कृष्णदेव उपाध्याय	नागरी प्रचारिणि सभा, काशी सं. २०१७ वि.
०६	भवाई स्वरूप अने लक्षणो	डॉ. कृष्णकांत ओ. काडकिया	महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय बड़ौदा- १९९६
०७	भवाई: नट वर्तन अने संगीत	डॉ. कृष्णकांत ओ. काडकिया	युनिवर्सिटी ग्रंथनिर्माण बोर्ड, गुजरात राज्य अहमदावाद-१९९४
०८	लोकधर्मी नाट्य परम्परा	डॉ. श्याम परमार	हिंदी प्रचारक पुस्तकालय
०९	लोकरंग उत्तरप्रदेश	दया प्रकाश सिन्हा	उ.प्र. हिंदी संस्थान, सांस्कृतिक कार्यविभाग, उ.प्र. लखनऊ, सं १९९०
१०	आपनी लोक संस्कृति	जयमल्ल परमार	प्रवीण पुस्तक भंडार, राजकोट, प्र.सं १९५९ द्वि.सं. १९७६
११	लोक साहित्य	डॉ. बापु राव देसाई	विनय प्रकाशन, कानपुर. प्र.सं.१९९६
१२	भवाई: तत्त्वचर्चा	सं. लवकुमार म. देसाई महेश चंपकलाल	जयंत शुक्ल, प्रमुख 'अक्षरा' ६, आम्रपाली सोसायटी, कारेलीबाग वडोदरा- ३९००१८
१३	आधुनिक भवाईवेशो अने तेनुं शास्त्र	जनक देव	भगवती ऑफसेट १५/सी बंसीधर ऐस्टेट, बारडोलपुरा, अमदावाद-३८०००४
१४	गुजरातनुं लोकनाट्य: भवाई (भवाईवेशो साथे)	रतिलाल सां. नायक	आदर्श प्रकाशन 'सारस्वत सदन', गांधी मार्ग, बाला हनुमान सामे, अमदावाद ३८०००१

१५	लोकगुर्जरी(वार्षिक) अंक: त्रेवीस	सं. डॉ. बलवंत जानी	हर्षद त्रिवेदी, महामात्र, गुजरात साहित्य अकादमी, अभिलेखागार, सेक्टर-१७ पगांधीनगर-३८२०१७
१५	लोक विज्ञान	डॉ. हसु याज्ञिक	डॉ. केशुभाई देसाई, युनिवर्सिटी ग्रंथनिर्माण बोर्ड, गुजरात राज्य, पाटनगर योजना भवन, गुजरात कोलेज पाछड, ओलिसब्रिज, अमदावाद-३८००६
१६	लोकगुर्जरी(वार्षिक) अंक: सत्तर	सं. डॉ. बलवंत जानी	वरदराज पंडित, महामात्र, गुजरात साहित्य अकादमी, अभिलेखागार, सेक्टर-१७ पगांधीनगर-३८२०१७
१७	लोकरंजन भवाई	प्रा, जनक देव	के. आर. जोशी. कुलसचिवश्री, गुजरात युनिवर्सिटी अमदावाद-९
१८	लोकसाहित्य विधा शास्त्र और इतिहास	डॉ. बापुराव देसाई	पराग प्रकाशन, ३११ सी, विश्व बैंक बर्रा, कानपुर-२०८०२७
१९	लोकनाटय भवाई	डॉ. कृष्णकांत कडकिया अनु. अविनाश श्रीवास्तव	डॉ. कृष्णकांत कडकिया ट्रस्ट एम- ८२/३८४ 'स्वरूप' सरस्वतीनगर आंबावाडी, अमदावाद-३८००९४
२०	गुजराती लोकसाहित्य विर्मश	बळवंत जानी	पार्श्व पब्लिकेशन निशापोळ, झवेरीवाड, रिलीफ रोड, अमदावाद- ३८०००१
२१	लोक साहित्य की भूमिका	डॉ. कृष्णदेव उपाध्याय	सहित्य भवन लिमिटेड ५६, रानी मण्डी, बच्चाजी की कोठी, इलाहाबाद- २११०३
२२	लोकसाहित्य भळी	बिपिन आशर	'सरगम', एम-१/१२३, रूरल हाउसिंग बोर्ड, कालावड रोड, राजकोट-५

२ शब्द कोश:

१. मानक हिंदी शब्दकोश पहला खंड: रामचंद्र वर्मा

२. हिंदी शब्द कोश: हरदेव बाहरी

३. हिंदी साहित्य कोश: डॉ. आनंद प्रकाश दिक्षित

४. बृहद हिंदी पर्यायवाची शब्दकोश: गोविंद चातक

५. गुजराती-हिंदी-अंग्रेजी त्रिभाषा कोश खंड -केंद्रीय हिंदी निर्देशालय, मानव संसाधन विकास मंत्रालय

३. पत्र-पत्रिकाएं

१. आजकल

२. अनुवाद भारती

३. हंस

४. हिंदी प्रचारवाणी तथा अन्य

४. इंटरनेट वेबसाईट्स

www. googlecom

www. bbchindi.com

www. hindiwikipedia.com

www. gujaratiloksahity.com

www. folkliteracher.com